

नचमरामये॥ भावेष्टुविर्यते देवोतस्माद्रोमहन्तरं॥ ८६॥ काठमाकुंगामा
माठाकामूर्तिमादेवतादेवताभावतागन्योवाहोदेवताहुंछसवदेवीव
डोभंनुभावनेछ॥ ८६॥ शिष्यारणं देवताचार्यज्ञानमाचार्यदेवतादे
वताषोषितांभर्तात्राहारणं जगदेवता॥ ८७॥ शिष्यकोदेवतागुरुहो
गुरुकोदेवताज्ञानहोस्वास्त्रीकोदेवतागुरुहोस्वकोदेवताज्ञानरा
हो॥ ८८॥ विपुंयश्पयथावद्भिमाचार्यपश्यदेवता॥ ८९॥ पश्यपश्यथा

मातामित्रं पश्यथास्तुतः ॥ ८८ ॥ ब्राह्मणालाई आगो जस्तो देव नु गुरुलाई दे
 वता जस्तो देव नु आमालाई पृथिवी जस्तो मित्र कन हो र जस्तो पुत्र लाई मि
 त्र जस्तो देव नु ॥ ८८ ॥ गुरु र मित्रि द्विजाती नां वशी ना ब्राह्मण गुरुः ॥ पति
 रे क गुरु स्त्री रागो सर्व भ्यागतो गुरु ॥ ८९ ॥ ब्राह्मण को गुरु अग्नि चारै वरी
 को गुरु ब्राह्मण स्त्री को गुरु युक्तु सै सवै को गुरु अती न अभ्यागत हो ॥ ८९ ॥
 उत्तम स्यापि वरिष्ठ्य नीचो पीरु मागतः ॥ पूजनायो यथाहो ये स

ग

हो

रामः
२३

र्वस्या भ्यागतो गुरु ॥ ९० ॥ उत्तम जातिका घरि नीच जाति अभ्यागत आ
 यापनियथा योग्य ले पूजा गर्नु सवै को अपूर्व आया को गुरु जस्तो हो
 ॥ ९० ॥ देवता पूजयेद्ब्रह्म मत्मा दत्तेन पूजायेत् ॥ श्रुतः पूज्यो पचारै
 रा विप्राराम मति वंदन ॥ ९१ ॥ देवता कत भक्ति भाव नागरि पूजा ग
 र्नु चाकर कत केहि दी संतोष गर्नु उपकार गरि श्रुत को से मान गर्नु
 ब्राह्मण कत दातु वर प्रणाम गरी संतोष गर्नु ॥ ९१ ॥ धर्म रम्य मले

राजानस्योमलं च ब्राह्मणः ॥ ब्राह्मणाय च यजुंते तत्र धर्मसनातनः ॥
 ६२ ॥ धर्मकामलराजा दुष्टतपकामलब्राह्मणदुष्टतस्कारराजसुपाई
 माहा ब्राह्मणपूजा दुष्टताहा सर्वदा धर्मरहं दुष्टनास दुष्टदेव ॥ ६२ ॥ आचा
 रान्तरफलते धर्म आचारात्फलते धर्म ॥ ६३ ॥ आचारदेवि धर्मपति दुष्ट
 आरैगन्पासवकार्यफलमिल दुष्ट आचारेर भूल क्षरापनिना राहुं
 दुष्ट ॥ ६३ ॥ ओं ज्यो तो जे न राति श्वरति शक्ति विरसिय ॥ विं भवो दापन

रामः
 २४

शक्तिश्वनात्मस्य तपसः फलं ॥ ६४ ॥ रवाट्पाकुरो माहा रवाट्पाकुरः सुद
 रिस्ती स्तिन भोगपति गर्नु शक दुष्ट पति भै कन दात गर्नु शक दुष्ट एति मा
 नुतपत्पाले दुष्टदेव ॥ ६४ ॥ बालेचैव चरे धर्ममदित्यं दुष्ट लुजी वितं ॥ फला
 नामपि पक्का दां शाश्वतं पतनं भवेत् ॥ ६५ ॥ बालकैसा धर्मगर्नु जीवतु
 भत्याको अतित्य दुष्ट भरे भोली कै दुष्ट म दुष्टा हा दुष्ट पल पति पाक्या प
 दिष्ट ग दुष्ट तौ जीवतु भ वि जां दुष्ट ॥ ६५ ॥ स दं भश्च दुष्टो धर्मः को धे

प्रातः
१५

नैव हतः ॥ अदृष्टं हतं ज्ञानं प्रमादेन हतं श्रुतं ॥ १६ ॥ दंभी को धर्म
व्यर्थः को धी को तपः व्यर्थः दृढचित्तं न हृत्पाको ज्ञानं व्यर्थं प्रमादं लेसावधानं ग
पाको सुन्याको व्यर्थः ॥ १६ ॥ अदीप्तं गौं हतो हो मो हता भुक्तिरसाक्षिका ॥ ३
पजीव्या हता कम्पास्यार्थं पाकक्रिया हता ॥ १७ ॥ अग्निप्रज्वलित न भै हो रामः
मग्न्याको व्यर्थः साक्षी नरावीरवाद्याको व्यर्थः परदे उचन मालालिक २५
न कल्पा दातृदिको व्यर्थः आकैतिमित्तपाकग्न्याको व्यर्थः ॥ १७ ॥ दा

रिदुःखाधिदुःखानि वंधनं व्यसनादि च ॥ अदातु फलमेतानि तत्प्रादानं वि
शिष्यते ॥ १८ ॥ दरीदुःखाको रोगी भयाको वंधनं भयाको को हि व्यसना
याको एतिथो कदा न ग्न्याको फलं होत स च व्यर्थं दाता गदैरुहनु ॥ १८ ॥
उलका इव बंधान्पेषु प्रविका इव जन्तुषु ॥ तादृशास्ते मनुष्येषु ये वध
मवीहि कृताः ॥ १९ ॥ धानकाद्युन्नजस्ता जंतुमाहाविमिला जस्ता ध
मन भयाका कानु व्यतस्तै हृद ॥ १९ ॥ तपजे दुर्जन संसर्ग मजसा

धुसमागमं॥ कुरुपुराणमहोरात्रं स्मरन्निष्पन्नमिदं नाम॥ १००॥ दुर्ज
 नकाले सर्गदो उलुसाधुकोले सर्गगर्भरातदिनपुराणगर्भयो संसा
 र अनित्यं भवति नानकमयिलेशिष्य ह हलार्ह मंडा जया॥ १००॥
 इति श्रीचानके सारसंग्रहे प्रथमरातके समाप्तम्॥ १॥ ॥ ॥
 सास्वार्थचक्षुषा विद्वान्चरेदो जीति चक्षुषा॥ वेदार्थचक्षुषा पिमा इत
 राश्चर चक्षुषा॥ १॥ पंडितलेखी स्वआखाले हे छंद राजानीति को आ

रामः
 २६

खाले हे छंद॥ आखाले वेद आखाले हे छंद इति यामनुष्यलेचि वा का आया
 ले हे छंद॥ १॥ राजा धर्मिणि धर्मज्ञो पापे पापसमे समा॥ राजा दो दुर्निह
 ति च यथा राजा तथा प्रजा॥ २॥ राजा धर्मिष्ठ भया प्रजापति धर्मिष्ठ दुष्ट
 राजा पापीष्ठ भया प्रजापती पापीष्ठ दुष्ट पापपुराणवरे विरगत्पारा राजा
 भया प्रजापति दुष्ट राजा ज्यागच्छेत् सो हि प्रजापती गच्छेत्॥ २॥ उद्य
 मे साहसं धैर्यं वलं बुद्धिं पराक्रमं॥ यदेते यस्त्यतिष्ठति तस्य देवोऽपि नृकटे॥ ३॥

चानः
२६

उद्यमनयोसाहसप्रयोधैर्यमयोबुद्धिमयोपराक्रमप्रयोःशक्तिगुराजस्रक्षे
डं हनन्तरमनुष्यदेविदेवपतिदराडं हनन् ॥ ३ ॥ साम्यदानेन भेदेन क
मेराचवलेन च ॥ सर्वशत्रुसदारात्रुर्घातनीयो नराधिपः ॥ ४ ॥ समताग
री कनप्रयोपरोरफारगारिकरपराक्रमगारिकनपराक्रमगरी कनसैन्य
लगारिकनसर्वथाशत्रुकोनाशगर्नु ॥ ४ ॥ पात्रेत्यागीगुरोरगीभोगीपरिज
नेः सह ॥ शास्त्रेवोधाररोयोद्धान्तपतेः पंचलक्षरां ॥ ५ ॥ पात्रकोविचा

रामः
२६

रनगरीदानगर्मागुरामापीतिगर्माज्ञाप्रपरिचारसंगभोगगर्मापरार्इका
अभिप्रायबुद्ध्यासंग्राममाश्रयभैरुद्गर्मायतिपात्रोवगुराभयाला
ईप्रकभंनु ॥ ५ ॥ उत्तमप्रणिपातेन श्रेयोभेदेन योजयेत् ॥ लब्धमर्थप्रदाने
नसमतुल्यपराक्रमौ ॥ ६ ॥ वडालाईप्रणामगारिहातलिबुभारकनकोफी
रगारिलोभीकनधनदीसबलाईपराक्रमगरीहातलिनु ॥ ६ ॥ नात्महि
उपरोविद्याविद्याहिदुम्परस्यच ॥ गुरुकुर्वईवीगानिपरश्रावंचलक्षये

॥७॥ आपरिदुअर्कासाईनकरुनुपराइकादिदुकोगोप्यगिरिआपुलेबुमी
 चानः रायनुआपुसंगकधुवालेलकायाजसोरक्षागर्पराईकोभावबुमीरा
 २८ वनु॥७॥मनसाचिंतितेकाय्यवचसातप्रकाशयेत्॥मंत्रलक्षणागूढा
 त्माकार्यसिद्धिश्चजायते॥८॥मनलेचिन्तायाकोवचनलेप्रकाशतगर्भ
 मंत्रजसोउपगारिकार्यगर्पायस्तालाईसिद्धिदुं॥८॥उपकारगुहि
 तेनरात्रुराशदमुदरेत्॥पादलग्नकरस्येतांकटकेवैवकंठकम्॥९॥

रामः
 २८

उपकारगिरिशत्रुलाईहातलीअर्काशत्रुकोकामगारिदिदुपाउमाविष्माको
 काठेकांठैलेकिजिआफालनुतहो॥९॥बहेदमित्रस्वंधनयावत्कालेवि
 वजये॥तथैवमागतेकालेभिंयाद्यटमिवाश्मनि॥१०॥आफविपत्तिमा
 हाकाधमाहापनिशत्रुकोकामगारीदिनुशत्रुलाईबुझाउनुजवकाल
 आईप्राप्पभयोतवगाग्रीभरिपालिहालीहुंगामाआफलिफेअरैग
 लु॥१०॥हेजीहेकधुवस्वहेमधुरेकिंतमायदे॥मधुरेवचकल्पारणी

लोकोयं मधुरं य॥११॥ हे जित्वा तितो पिरा क्या ननि कोमां ददु स मधुर क्या
 चानः नखा दै नर नर नितिकान वाल मि ठै कुरो वाल हे कल्यारणी लोक लवे मधुर नि
 २६ कोमां ददु ॥११॥ जि हा ग्रे सं व स ते ल क्ष्मी जि हा ग्रे मित्र वां धवाः ॥ जि हा
 ग्रे वं धनं ची पि जि हा ग्रे मर रां ध्रुवं ॥१२॥ जि हा का दु प्या माल क्ष्मी व द्यु
 मित्र पी नि भाई पी नि मर रा पी नि ति श्रु य द्दु न् ॥१२॥ प्रिय वा क्य प्र दां ने न स
 वे नु व्यं ति जंत वः ॥ न स्मा न्ते दे व व क्त वं व च नं किं द रि ड ता ॥१३॥ मि ठै कु

रामः
 २६

रो वी ल्या प छि स वै प्र स न्नं हुं द्दु न् त स्का र रा पि यारो ग^{ला} त्या कुरो वाल नु व च न मा
 क्या न द रि ड हु न् ॥१३॥ स ग्नि दो गर द श्वे व रा स्व परि गृ न्ना प हाः ॥ क्ष त्र दा
 रा प हारी च य डे ते आ त ता पि नः ॥१४॥ ध र मा आ गे मि ल का ई दि न्ना
 वि य धु वा ड न्पा हा त ले ह ति यार लि न्पा ध त ह रा ड न्पा र्वा स्त्री ह रा ड न्पा
 य ति ता आ त ता ई मं न् ॥१४॥ आ त ता यि न मा यो नु म पि वे दां न पार
 गां जि घां से नं जि घां स्त्री या त ते न व न्ना हा म वे त् ॥१५॥ आ त ता यी वे र

पारगयापति जा फुलाई मालु जाई त्यालाई मालु ते सले ब्राम्हत्याला गेदे
 चानः जा ॥ १५ ॥ राखु पालयते नित्यं सत्यं धर्म परायणः निर्जिता परमैत्यानि प्रजा
 ३० धर्मरापालयेत् ॥ १६ ॥ सत्य धर्म साहाय्य परमैक नराय को पालनागर्तु
 शत्रु को सत्य लाई जिनि कत प्रजा लाई धर्म ले पालनागर्तु ॥ १६ ॥ पुष्पे पु
 श्ये किंचित् स्यात्स लेखे देन कारयेत् ॥ मालाकार इवांगारियथा ज्ञाता
 तिस्कारताम् ॥ १७ ॥ फुल फुलति प्रिय कत ज्ञानेन उरेवली न्यापारी ज्ञानो

रामः
 ३०

मालिनि लेवगे चाम विचार गर्हन् तत्तोरु जाले परि प्रजा ला इदुः खनदी
 कन कर लाउनु ॥ १८ ॥ अरि मीत्र मुदा सीनमध्य त्वं विरोगुर्गु ॥ यो न
 उध्यति संदात्मा सच सर्वत्र नरपति ॥ १९ ॥ यो शत्रु यो मित्र यो उदासी
 यो मध्य यो बुढो यो गुरु भनि बुद्धेन यो घटिया बुद्धि मया कोना
 सिद्ध ॥ २० ॥ जनाय व्यय कर्तार मनाथः कलह प्रियः ॥ आतुरे सर्व
 भक्षी च तरुणी धुंविनरपति ॥ २१ ॥ आपरा आमदने दाजु च्यालो

नी १

खर्चगन्धविना अर्थकलहगन्धारोगलाग्यामासवैथोकरवाट्याएसा
 चानः मानीरचादेनासिंदु ॥१९॥ कः कालः कानिमित्तानिकोव्ययागमौ ॥ कस्या
 ३१ हुंकाचमेशक्तिरितिचिंतामुहुर्मुहु ॥२०॥ कालकौन्धः कोमित्रद्वन्द्वः
 कौन्धदेशो क्यारवर्चहुं द्वा मदनिक्याद्धमकौन्धनमेरोस
 क्तिकतिको द्वा यो नारैवारचिंतनागदैरहु ॥२०॥ सिंहादेकंवका
 देकेशिष्ये चत्वारिकुक्कुटान् ॥ वायतात्पंचलियेचत्वारिभ्यश्चनस्त्री

रामः
 ३१

शिगर्दभात ॥२१॥ सिंदुदेवि एकगुराचकुह्वादेवि एकगुराचकुहुरादेवि
 चारगुराकौवादेवि पांचगुराचकुह्वादेवि द्वागुरागदाहादेवि तीनगुरा
 र्दोसिककुमेद्व ॥२१॥ प्रभूतकार्यमल्पं वा यो नरः कर्तुमिच्छति ॥ सर्वो
 रंभेभूतकार्यं सिंहादेकं विधीयते ॥२२॥ ठूलो कामतथापतिः सानुका
 मनयापतिः सवैकाय्यतत्परः सैकलसिंदुको हर्घा इगर्नु ॥२२॥ इंदियति
 तुल्यं इत्यवकावत्परिउत्तोनरः ॥ काय्यकालोपपन्नानि सर्वकार्यणिग्या

धयेत् ॥ १३ ॥ सब इंदिय लाइये चिकन बकु ध्वारे परि जाया कावे लामा हा का र्य
 चानः गर्नु व ध्वा संग एक गुरा लिलु ॥ १३ ॥ प्रागु माने च छ दं च स विभोगं च वं धु
 ३२ ॥ त्विपमा क्रमा भुजीत शिष्ये चत्वार कुरु कुरात् ॥ १४ ॥ विहाने उठ न्या ७ दुर्गमा
 वं धु वर्मला इवा डी खानु स्वास्ती लाई वलै सित भोग गुरु एति चार कुरो वरु
 रादे विस्मिकनु गुरा भया को कलै को पनिलिलु ॥ १४ ॥ गठ मै थुन कर्तव्ये रामः
 कलि वंधव संग रहे ॥ उपमा दी सदा कर्तव्ये च शिष्ये च वा यसात् ॥ १५ ॥ ३२

गोप्स गरि मै थुन गर्नु कर्तव्ये वेला मा हा घर लाई नु न मातनु विष्वा ल कलै को
 न मानु एति पाच थो क को बो छे ड सि करनु ॥ १५ ॥ वहा शी चाल्य संतु यः सुति
 दः शी धु चेतनः ॥ स्वामि भक्ति श्रु श्रु य डे ते भवान तो गुरुः ॥ १६ ॥ पा या धे रै
 खानु न पाया थो रै ले ला तु कुरु न्या थो रै ति दा द न्या चा डे चेतन्य दृष्ट्या स्वा
 मिका भक्ति राखनु करे पति हुनु एति ध्वा क कुरु र दे विस्मिकनु ॥ १६ ॥
 अवि श्रांते वेद द्वा र शी तो ले च न विंदति ॥ संतु य च भवे नित्यं श्री शि

शिष्ये च गर्दभात् ॥ २० ॥ न विना इति शिरो कन्या वि सोता तो पति न मा न्या स
 चोतः वदामं तो ये मा न्या इती न गदा हा का शि कतु ॥ २० ॥ विं स न्ये ता गुरा प्रो ता
 ३३ यस्तु कुर्यादि च क्षराः ॥ स ले यति रै स न् सर्वान जे य श्व भविष्यती ॥ २१ ॥
 इजो वी तन गुरा भव्य का जो चतुर लिं छ त सो म नु य स वै रा उ क न जिती
 तवै ले जिता नु पति हुं छ ॥ २१ ॥ य पेशा त वयं पे च वि रो धं च पर स्पर म् ॥ ज
 रै रा त स्य मा रो नु वयं पे चो त रै रा तं ॥ २२ ॥ ति मि श्र या दौ हा मि नो च दौ

रामः
 ३३

परस्पर ति म्ना हा मा वै र दू त पति उर्को रा उ आ इ ला गदा ति मि हा मि नो च उधि
 क शय दौ भ ति पु धि वि र ले दु जो ध त द्द उ भं दा भ या ॥ २२ ॥ दि त्वा मि त्वा च
 म र्मा सि कृ त्वा वै र म शं त के ॥ ता त य स म तो धा ति यः पर पर ए व स ॥ ३० ॥
 आ फु र्दु टी द्द म र्म को कुरो ले का टि पर स्पर वै र ग री न मी ल्पा य नि दा
 जु भा ई पे र ति गि ल द्द न जो रा उ हो उ रा उ र द्द आ फु र्दु दे न ॥ ३१ ॥
 मूर्खो यो भु म्पा रा म लुः सं त प्र चे त लो ॥ पर स्पर प को रै रा उं लो भ व

ति विग्रहं ॥३१॥ मरुवेन दुःख्या माति स्तुतिरर्थ चिन्ता सगरि परस्पर उपका
 चानः रलेमा चला धुजन के विग्रह होला ॥३१॥ एकोदरासुथ गगी वाये चरति महारी
 ३४ वे ॥ असाधिता विजयति मैहराडा विवपसि रौ ॥३२॥ पेठ एगो छटा डको दुइ भया
 को मैहराडा पक्षित मुद्रमा हासा धुना गरी हुडे छ आ पूरा उज विहार मै
 हराडा को जाल मय छर न को रात्रु मित्रु मरु छ ॥३३॥ व्यसने सति कुवीत
 येन के नापि सं हति अक्षवातर गो प्रेछः पुरा दाशरथि र्यथा ॥३३॥ सा

रामः
 ३४

पदमा हा कलै छेड नया पीति मजना गरी ताडना गर्नु श्रीराम ले पथु गरा को
 प्रह्वर स माति मित्र गरी आ पुत्र आप दाता र नागरे छन ॥३४॥ दुस्तारे सागरे
 तीरा सम जं वान रे वले ॥ अहता पूर्व रामे राक्षे नुर्वे ध मुसागरे ॥३४॥ धे
 रे वटाल मै आया सातु नया पीति हल के गर्नु छेन वानर गरा मान ले सम
 दुमा होतु वे धना गर्नु छेन श्रीराम ले ॥३४॥ चिन्ता ज्वरो मरु स्या राम म आ
 नां मै थुने ज्वरे ॥ असौ भाग्ये ज्वरे स्त्री रोग वस्तु राग माते पा ज्वरे ॥३५॥ म

नुबको ज्वर भन्ना को चिंता हो घाटा को ज्वर मै थन हो अस्थी जरा को ज्वर पुरु
 चातः वन भया को कपरा को ज्वर घाम हो ॥३५॥ अथा जरा मनुष्या राग मत्त धावा
 ३५ जितो जरा ॥ अमे थन जरा स्त्री राग मश्वानां मै थन जरा ॥३६॥ मानि सलाइ रको हरि
 हिड नुबद्ध नहि डापा घाटा हृद्ध मै थन जरा गन्धा स्त्री हृद्धा घाटा को मै थन हृद्धा हो
 ॥३७॥ कया हृति पराधीना वयं वा सो निराश्रयः ॥ मत्त पूर्वार्थ संयुक्त सर्व कया
 हरि डाता ॥३८॥ अर्का का अधीन राया का जिड उव डोक ठीन कलै को जाम्र

रामः
 ३५

नयाप धमा गतिम् ॥ पयो पिशौं डिनी हृत्ते सध मित्प भिधीयते ॥ ५८ ॥ अथा
 धुको तंग भया घटिया बालाई हृत्त मदे चत्वाले दुदल्पा या पति मदे होला भति हृ
 ज ॥ ५९ ॥ असत्तं पर्व देवेरा अधमा यांति सा धवा ॥ मार्ग ति मि र देवेरा समो वि
 यमा यते ॥ ६० ॥ अत्ता धुलित संसर्ग भया सा धुपति अत्ता धुपति अत्ता धुहृद्ध
 अथारो भया पद्धि वेरोवर बाछे पति ड चरवाले देविं हृ ॥ ६१ ॥ अत्त मै स हृत्तंगे
 नको नयाति समुत्ताति म ॥ मृद्धी तरादि धार्यते मथितैः कुसुमैः सह ॥ ६२ ॥

उत्तमसंगगच्छाद्युटियापतिउत्तमहुंहु-फूललितउत्पाकोत्तरापनिशिरमाहा
 गाना: ३६॥५२॥किंकरिव्यतिसंपर्कःस्वभावोदुरतिक्रमः॥पश्यामुपफूलमध्यस्थःकषाये
 ३६ नास्ततोगतः॥५३॥भलालितसंगतभयापनिस्वभावहुंहुदेनः॥नामुकाफहसि
 नकोकोयोअमिलोगुलियाहुंहुदेन॥५३॥शर्करारतिक्षारेणामयेनिंवप्रतिस्थिरामः
 तं॥मधुक्षीरममावृष्टिर्निवःकिंमधुरायते॥५४॥पुस्तकेकचयाविद्यापररुक्ते ३६
 अयद्रुते॥कार्यकालेचसंप्राप्तेनसाविद्याततद्वने॥५५॥पुस्तकमातेरव्यादि

आपराइकोफातदियाकोधनकामपरिआयाकोकेलामाहातोविद्यापतिधनपतिका
 मपदेन॥५५॥दूरस्थानिचमित्रारिनिरेहभ्रैवबंधवाः॥प्रयोउनेकिंकरिव्य
 मर्थितोतिव्यलालिच॥५६॥ताठभयाकोमित्रप्रीतिनभयाकोमाईक्याकामपा
 हिलामागपाकोतपायाकोनस्तोह॥५६॥अव्यादुमप्रव्यरिगदूरस्थानिचबंध
 धवाः॥काताचालेव्यभस्ताचयःकालेनोपतिवृति॥५७॥वनमाकोफूलःता
 ठभयाकोबंधवर्गक्षिन्नामालेरयाकोस्त्रीरतिकाममाहाआउदेन॥५८॥

चान
४९

डाकूलकीकन्यानरात्री भयापनिविवाहगर्तुनीचकोरासी हतपठिविवाहानगर्तुवरोव
रकुलमाहागर्तु॥६२॥विषादप्यमृतं ग्राह्यं ममेध्यादपि कांचनम्॥नीवादप्युत्तमं विद्या
स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि॥६३॥विषवाटपनि अमृतं किं किल नु अयं विषे देवीपत्नी सुवर्णा
लिनुनीचमनुष्ये देवीपति उत्तमं विद्याभया लिनु स्त्रीरत्न घटियाकुले देवीपतिलिनु
॥६३॥कस्वदोषकुलेनास्ति व्याधिनाको नपीद्यते॥को न न च लहं प्राप्नुम्य श्रीश्रुति
रंतरं॥६४॥कस्मावदुमादोषद्वेन कस्मा ईरोगभयाको द्वेन वेत्स्यत कश्चे पायाको द्वे

रामः
४९

नलक्ष्मीलदाकस्माहं द्वे॥६४॥दोषोऽप्यस्ति गुरोऽप्यस्ति निर्गुरोऽपि जंतुषु॥सुकुमा
रस्य पद्मस्य नाहो भवति कर्कशं॥६५॥दोषगुरान्न भयाको परिगच्छेन्न वदत को काल
कमल हतपनि डाठमाहाका ठाले खट्वा द्वे॥६५॥अमृतं शिशिरे वदति रमृतं क्षीरभो
जने॥भार्यागुरावती चेव अमृतं बालभाषितं॥६६॥शिशिरकातुमा अग्नि अमृत
क्षीरभोजने यनि अमृतगुरावती स्त्रीपति बालवको वोलि अमृततुल्य हो॥६६॥दु
र्ध्वभावा दुर्ती वारी दुर्ध्वमचक्षुः प्रभुः॥दुर्ध्वभावसुहृन्नारी दुर्ध्वमवचने प्रियम्

॥६॥ प्राकृतसंस्कृतवाणी अपराधमाफगर्भप्रभुप्रियबोलन्यासीपियारोले
 चानः ग्यावचनरतिदुर्लभहृद॥६॥ नदीनां जंहुवी श्रेष्ठानारीणांचपीतिवृत्ता
 ४२ ॥ मनुष्याणां नृपे प्रादुर्देराणां यत्र निवृत्तिः ॥६॥ नदीविषयमागंगास्त्रीमा
 हापतिवृत्ता मानी समाराजादेशमाहामीलदोशेष्टभंनु ॥६॥ पुत्रपौत्र
 समाकीर्णदासी दाससमाकुलं ॥६॥ आर्याविरदिते पुंसां पथाररपंतथा ॥ रामः
 दमः ॥६॥ छोरानातिस्वै प्रकारले दासी दासले युक्तभयाकोधरुत ४२

पतिस्त्रीरहितरुतत्ररापवनजस्तोहृद॥६॥ सर्वेषामेव रत्नानां स्त्रीरत्नं हि र
 नुत्तमं ॥ तस्मात्तदर्थं निरता स्थायात्पत्ता धनेन किं ॥७॥ सर्वैरत्नभंदास्त्रीरत्न
 उत्तमतस्मिन्निति स्त्री न भया धनलेक्या प्रयोजनं ॥७॥ कुस्त्री हंति कुटु
 म्बानि कुपुत्रे हृत्पते कुलं कुमं चि हं न्येते राजाराष्ट्रचौरे रा हृत्पते ॥७॥ घ
 टीयास्त्री भया कपु वना रा हृद कपुत्रले कुलं कुमं चि ले राजा चौरले देशना
 सी ॥७॥ स्त्रीणां दोषसहस्राणि गुरास्त्रीणि महीयते ॥ गृहाचारमुतो

त्वन्निर्मररोगेपतिनासह॥७२॥स्त्रीकोदोषहजारद्वन्द्वगुराभ्रपातीरपुत्रजन्माह
 दिनुगहकेवेवाहारपतिमर्दासाथजान्नु॥७३॥कवयःकिञ्चत्परप्रितिकिञ्च
 क्षंतिवायसा॥प्रमदाकिञ्चत्परिक्वितिकिञ्चजल्पन्तिमघपाः॥७४॥कविहृल्लेखा
 देवदेनकाविकाथोकषादैतस्त्रीलेखाशार्देनसुरापाठागर्भलेखाव
 कदैत॥७५॥पुत्रपुत्रो जन्मार्थपुत्रःपिराडपुत्रो जन्मः॥हितपुत्रो जन्ममि
 त्तःसर्वमात्मपुत्रो जन्म॥७६॥पुत्रकाषातिरस्थीचाहिंद्वपिराडकाषातिरपु

रामः
 ४३

त्रवाहिंद्वहितकरादेवाडलाभीतिमित्रचाहिंद्वसर्वप्रकारआप्रेतिमित्रचा
 हिंद्व॥७७॥समुद्रावरणाभूमिःप्राकारावरणागहःजरेन्द्रावरणादेशाःश्रु
 रित्रावरणास्त्रियः॥७८॥समुद्रलेपथीवेष्टितद्वःपर्यारलेघरवेष्टितद्व
 राजालेदेशवेष्टितद्वचरित्रलेस्वास्त्रीवेष्टितद्व॥७९॥नगसप्तपिण्ड
 वासांतिनप्राकारश्चरक्षकाः॥नवंधुर्तेववंधोवात्यशिलादिभलस्त्रियः॥८०॥
 घरलेपतिरक्षाहृदैतदाज्जुभाईपतिरक्षागर्भस्तेतवाधिकतपतिर

चानः
४४

क्षुं दैन स्त्री का वटि या शील ले मात्र क्षुं द ॥ ७६ ॥ नदी पात यते कुल नारी पा
ते ये ते कुल ॥ नारी शां च नदी नां च स्वर्द्ध दल लिता गतिः ॥ ७७ ॥ नदी लिती र व सा
उद्ध न स्त्री ले कुल व सा उद्ध न दी र ता री स्वर्द्ध द गति द्ध ॥ ७८ ॥ लता पा श्व
स्थितं वृक्षं मत्पं पा श्व स्थित नृपः ॥ पा श्व स्थं पुरुषं ये षि द्वे ष यं ति त सं रायः
॥ ७९ ॥ लहर ले उभा फल जी क का ह क्ष म सा उद्ध न राजा ले न जी क का ह वै व क प
त्या उद्ध न स्त्री ले पति न जी क को पुरुष ले ला उद्ध न र मा लं दे ह्ने द्ध ॥ ८० ॥ नैव प

रामः
४४

रपति जा तं चः कामा धो नैव प शति ॥ न प र पति म दो न्म त्त अर्थ दिो वं न प र पति ॥ ८१ ॥
ज न्मै को अं धा को म को अं धा अहं का री ध न धे र दुग् पा र ति ले दे ष दे न अ धी धं
नु ॥ ८२ ॥ जी र्ण म चं प्र सं शति भार्या च गत यौ व नां ॥ र रो प त्पा ग तं श्र रं रा स्य च
ग ह मा रा तं ॥ ८३ ॥ म नु ष्य को षा ई प च्चा को अ न्न व य स ग या की स्त्री सं ग्रा म
वा ट जि ति फ र्का श्या या को श्र र घ र ल्पा ई यु ग्पा को षा अ न्न र ति उं स द्वा ई द्ध र
॥ ८४ ॥ ल क्ष्मी ल क्ष रा ही नै व कु ल हि ते सर स्व ती ॥ अ पा त्रे स्म ते नारी गि रौ व र्ध ति वा स वः ॥

चौठाः

४५

॥८॥ लक्ष्मण हीनमनुष्य देखे उको लक्ष्मी हीनकुलमाविद्या अपात्रमाहाला गीरहत्याही
पर्वतमावट्या को पातिका मलार्देन ॥८॥ यस्य भार्या विह्वला च कल्पलीक बहूप्रिया ॥
उत्तरोत्तरवादी च सा जरातजरा जरा ॥८॥ कस्की स्त्री जरा मी कलहगर्भा पुति पादभ्रंश
रीयाते स्तपुरुषला इवुठो मंनु वुठो लाई वुठो न देन ॥८॥ यस्य भार्या दुरुत्तपाच
भर्ता रमनुगामिनी ॥ नित्यं मधुरभाषी वत्सा श्रिया नो श्रिया श्रिया ॥८॥ जस्की
स्त्री सुरुपकामवदोगर्भा मिठो बोलन्या तत्काल क्षमीने ही होसे पति लाक्ष्मी ॥८॥ रामः

अंदेन ॥८॥ यस्य भार्या गृहे नित्यं शुनीवपरिगर्जति ॥ तस्य स्त्री दंति गात्राणि पद्मिनीव हि
मागमे ॥८॥ जस्की स्त्री कुकुती जेतो गजिन्द्रे तस्य पुरुषका शरीर शिशिरमा हिडपाया
कोकमरे गदैजो छुण्ण ॥८॥ यस्य भार्या गृहे चैव भौते वदित कारिणी ॥ वदते तस्य गात्रा
णि भ्रूकपक्षे यथा शरीरा ॥८॥ जस्का स्त्री घर्मा ग्यामाले दित गत्या रैरा द्वे तस्य पुरुषका दे
ह भ्रुकपक्षे कोचं दमावठ दारै वठ ॥८॥ किं जाते र्वदति पुत्रैः शोकरंता पकार
कैः ॥ वरमेककुलो लेवी यत्र वि श्राम्यते कुलो ॥८॥ शोकरंता पदी न्या छोरा छेरे भ

यालेकागर्नुजलकठधामन्पासाधुविद्यावन्तरैकैमयातिको॥८६॥यकाभार्यात्रयपुत्रादेह
 चातः लीदराधेनवः॥कस्याकालावशानेचनतेयास्यंतिविक्रियां॥८७॥एकस्त्रीतीक्ष्णरादुई
 १६ हलीदरागाईदुहनापद्धिवाटयककस्याजस्काद्धरत्न्यामनुष्यलाईगाहीपैदता॥८८॥
 यच्छयावद्वपुत्राययेकोपिगयाउजेत॥यत्रेदाउश्वमेधेननीलवारुषमुत्त
 जेत॥८९॥पुह्यलेहोरोठैरैऽत्यन्त्रगराडसैवगयामोगैपिउत्तीदियाएकउवस्यजा
 लागयातगयाउश्वमेधकोपुरादुहत्यानीलवृषोऽसर्गतागता॥९०॥एकैतशु

रामः
 ४६

एवक्षेणदलमानेनवद्विजा॥दह्यतेनवतंसर्वकुपुत्रेराकुलेयथा॥९१॥एकैशुक्ला
 कोहक्षमाआगोलायापद्धिसववतजलेदठकुपुत्रेलेकुलकनतसौपोलदु॥९२॥ए
 केनापिसुवृक्षेरापुष्टितेनलुगंधिता॥वाह्यतेनवतंसर्वकुपुत्रेराकुलेयथा॥९३॥
 एकैलुवृक्षकुलकोगंधलेसैववतलुवादागद्धरतलेनपुत्रैकैलोकुलथा
 मृदु॥९४॥यस्यपुत्रावशातिन्याभार्यादुहत्यानुगामिती॥विभवेवपिसंतुष्टाः
 स्वर्गंतस्यसहीयते॥९५॥जस्कापुत्रजाफ्रावशामाद्धरवाकरत्नीमदमहोकाउ

जप्रायजगतिहृलगर्हच वदामयापतिगमयापनिसंतोषगर्हच तसैस्वर्गमनुकृमिमा
 चाता॥ मयापनि॥१॥ येपुत्रास्तेपितुर्वरपाः सपितायस्तपोवकाः॥ तस्मिन्वयत्रविश्वाससाभा
 ४७ र्थायत्रनिर्वृतिः॥२॥ यस्काक्षेरावावाकावसमाहृतेहोक्षेरासंतुजस्रलेपालताग
 चोत्सोईकावुहोविश्वासजस्रदेडगरीहृमित्रतसैकतमंतुःस्वो जस्रदेडचित्तव
 स्याडसैलाईनेनु॥४॥ यस्मिन्जीवतिजीवंतिविप्रमिवारिवाचवाः॥ सपर
 लेजीवितेतस्यज्ञात्माथंकोनजीवति॥५॥ जस्रलेजिडदात्रामरामिवदा

रामः
 ४७

जस्रलाईजीडहंसफलडसैजियाकोहृआफ्राजिडमात्रपालीतकोजिडंदैता॥६॥
 ३॥ सजीवतिगुरणयस्ययस्यधर्मसजिवति॥ गुराधर्मविहीनस्यतिष्फलं
 तस्यजीवितं॥६॥ जस्कागुराधर्महृजिडनुडसैकतमंतु॥ गुराधर्मलेहीन
 मेजिडनुनिष्फल॥७॥ वाचासरस्वतीयस्यतार्यीरूपवतीसती॥ लक्ष्मी
 त्तागवतीयस्यसफलंतस्यजीवितम्॥८॥ जस्कामुखमासरस्वतीहृरू
 पवतीपतिवृतास्थीहृदातगर्तुसामर्थहृलक्ष्मीनैकतजियासफलतसै

चातः
४८

लाई मनु॥२५॥ धर्माथर्काममोक्षारां यत्पुकेपिन विद्यते॥ अ जागलस्तनये
बनिरथ तस्य जीवितो॥२६॥ अत्तमनुष्य धर्म अर्थ काम मोक्ष शक्यैथो कपति
छे नतत्पोमनुष्य को वा का का गला माई दकुं दित तो नू ददि द्या भव्या होइ ना
सर्थ अर्थ जूनु हो॥२६॥ तत्प धर्म विहित स्य दे तं पांति च विक्रियो॥ स
लोह कार वखे वखये चैव प्रजीवति॥२७॥ सत्प धर्म हीन मै दिन व्यतीत हुं दन
तत्को निया को स्वास मात्र आया को हो लोह कार को खला सी जतो हो॥२८॥

रामः
४८

शत्रोरपि गुरावा च्या दोषावा च्या गुरोरपि॥ प्रकृति शतं वचो ग्राहं न वाचं गुरुरगौर
वात्॥२९॥ शत्रु को पीति गुरा मनु गुरु को पीति दोष भंडु गुरु लाई पीति भारि त्व ठग
नु सत्प वादी हुंनु॥२९॥ अ कर्तव्यं कर्तव्यं प्रारो कं ठ गतैरपि॥ कर्तव्य मेव कर्तव्यं
प्रारो कं ठ गतैरपि॥३०॥ प्रारो कं ठ वा ट जानु ला ग्या पीति तग र्त्वा काम तग र्त्तु
गर्त्वा काम अवश्य गतुं तसर्थ यथा र्थ जतु॥३१॥ दुर्जने सह संगे न मज
लोपि विहाय पति॥ प्रहं डे जल मि त्या हु कर्द मै कलुषी यते॥३०॥ दुर्ज

न संगमया स जन पीति नाटिं ह जसो हिर्मल जल हिलो ले धमिली हुं ह तले से ग
 चातः दोय हो ॥ १०० ॥ १०१ ॥ इति श्री चानके तार से हो हे द्विती य रात के ॥ १०२ ॥ ॥ १०३ ॥
 ४९ काले चरि पुरा संधिः काले च मित्र संग हरा कार्य कारण मा श्रित्य काले वाप
 ति परिदुतः ॥ १ ॥ दिन समय का फल ले रात्रु हुं ह समय का फल ले मित्र हुं ह राति
 जन ले समय हरिका जगर्तु ॥ १ ॥ कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः ॥
 कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि उरति क्रमः ॥ २ ॥ समय ले सृष्टि गरा उं ह संम

रामः
 ४९

मले संसार ग ह समय ले जगा उं ह सैव थो क ग र्त्वा समय हो ॥ २ ॥ कालात्पु
 रो हते वी जं फलं कालात्पु वर्तते ॥ कालात्पु वर्तते सृष्टिः पुन काम लोपि स
 हरेत् ॥ ३ ॥ काल मा हां वी जगर्तु काले ले वी ज उं प्र ह काले ले फल फल हं
 काले ले सृष्टि ग ह फेरी काले ले संसार ग ह त स ज थ स वै चा ही काल ठु लो
 हो ॥ ३ ॥ स्व दि शो भूमि रा प भु चं द्रा की तल मा रू तः ॥ सर्व सं ह र ते काल ल
 स्मात् कालो म ह त रः ॥ ४ ॥ प्रा का श दि शो भूमि प्रा नि चं द सूर्य भु मि वा य

चातः
५०

एतिसर्वकाले संहारगर्हतस अर्थकालडोहो ॥४॥ किं करिष्यति वक्ता च श्रोता य
त्र तविद्यते ॥ नमः पराक्रममेरज कः किं करिष्यति ॥ ५ ॥ सुप्ता तया काठाडो
लको कालाग्न जागार स कागाड माहा धीवी को कालाग्न ॥ ५ ॥ कदली व
नमध्यस्थो वद्विर्मद पराक्रमः ॥ अविवेकी जगत्याने गुरावा न किं करिष्यति
॥ ६ ॥ केराका वो दमाहा जागा को पराक्रमे न विवेक न शया काठाडे माके दि
शी परे द्देता ॥ ६ ॥ पुलयेति नमर्यादा भवति किल रागरा ॥ सागरा ते दसि न

रामः
५०

मिच्छति पुलयेति तस्मात्भवः ॥ ७ ॥ एतिगर्तु एतिगर्तु मत्पाका मर्यादा साधुत
संगे दुःखं प्रलयकालमाहा समुद्रले मर्यादानि जाच्छसा धुजतले प्रलयका
लमाहा पति मर्यादा छोड देन ॥ ७ ॥ मेरुश्चरति कल्पेते मर्यादा सागरस्य च
॥ प्रतिप्रत्त महासात्वात चलंति कदाचन ॥ ८ ॥ प्रलयकालमाहा सुमेरु म
निचल स मुद्रले पति मर्यादा ता द्यच्छसा धुजतले दुःख सुख माहा पीठे कु
मार्ग वलैत ॥ ८ ॥ विद्यते स्थी शुचापलं विद्यते वा मरोत्प ॥ पाह्यं विद्य

धातः
५१

तेनीचेदयासाधुविद्यते॥सीदेउचंचलताहुंछवाहसोईतयहुंछनीचाजत
देईछुडात्रिहुंछसाधुजतेछेईदयाधर्महुंछ॥६॥साधुसत्मातमात्रेरागवे
तिदेहविक्रय॥उपकारज्ञानेनापिदुर्जनःकेतगजति॥१०॥साधुजतला
ईलंगगदीदेहविकेरपतिआफ्राहुंछशायगुरालायाकोछतपतिआ
प्रहुंछशायगुरालायाकोछतपतिदुर्जनःआफ्रहुंछदेन॥१०॥उधयो
ध्यानिशास्त्राणितावुधःशास्त्रबोधक॥प्रत्यक्षेपिहृतेदीयेचतुहिने

रामः
५१

नमरूपति॥११॥सज्जतमस्याशास्त्रकाकराहुंछमखलाइशास्त्रकाकुरालेउ
रुण्याछेनउत्पक्षदेयमलियारवालिराघनुरग्रायाहुस्यासवैदेयका
रगालेकोहिदेष्टेनतसोहो॥११॥नारिकेफलाकारादृश्यतेकेपिसज्जना
॥अन्येपिवदराकारावाहिरैवमतोरमा॥१२॥सज्जतमस्याकावाहिर
यत्येतित्रमसिनादरितलज्जतादुर्जनमस्यावाहिरमसिनातित्रमा
खमावयरजस्ता॥१२॥चंदतेशीतलेवंदुवंदनेततुचंद्रमा॥चनुचं

चातः
५२

रतयोर्मयेसाधुसंपर्कशीतले॥१३॥शीतलमत्पाकोश्रीखराउरचेडुमाहुनः
श्रीखराउरचेडुमासंदासाधुजतकोसंगमशीतलहो॥१३॥अधमावतमिच्छे
तिप्रीतिमिच्छेतिमध्यमाः॥उत्तमामानमिच्छेतिमानं हिमहतां ध्वतां॥१४॥
नीचजतधनकोइछागर्हमध्यामजानप्रीतिकोइछागर्हसाधुजतमात
कोइछागर्हमातमत्पाकोसाधुजतकोधराहुनः॥१५॥ममिकावुरामिच्छे
तिधनमिच्छेतिपार्थिवः॥नीचाकलहमिच्छेतिशान्तिमिच्छेतिसाधवः

रामः
५२

॥१५॥हिंगालेघायाहृचाहुंछराजालेधतरुचाहुंछनीचलेकलहृचाहुं
छंसजुजलेशान्तिहवाहुंछ॥१५॥इतरेचार्यमिच्छेतिरूपमिच्छेतिदारि
का॥ज्ञातकुलमिच्छेतिस्वर्गमिच्छेतितापलाः॥१६॥अधमजनधराइछाग
र्हकन्याहररूपइछागर्हज्ज्ञातिहरगोत्रकाइछागर्हजतपसीहर
स्वर्गीकाइछागर्ह॥१६॥अतिलेशेनयद्वयमतिलोसेनयत्सुर्ये॥प
रपीडावयावृत्तिनैवसाधुविद्यते॥१७॥वडाकछलेधतकसाडनुलो

चातः
५३

भलेसुखगर्हपरलाईपीडागर्हएतिथोकसजनर्थाइहुदैज॥१७॥अशक्य
जाभरनेप्राज्ञअकार्यनैवकारयेत्॥स्वल्पकार्येनकार्यचनिष्फलैवका
सेवयेत्॥१८॥सजतासकन्याकाजकोआरंभगर्हैनर्लोभदेवायापनि
कुर्मगर्हैनर्जीचकामगर्हैनर्निष्फलदुष्पाठाडसेवागर्हैनर्॥१९॥
शैलेशैलेठमशिक्यमौक्तिकंतगजेगजे॥साधवोठहिस्ववचंचदतं
नवनेवने॥२०॥सर्वपर्वतमामाशिक्यहुदैजसर्वहातिकास्तकमा

रामः
५३

हामोतिहुदैजसर्वेथामसजनहुदैजसर्ववतमाहाश्रीखंडहुदैज॥२१॥
परकार्येपुष्टतात्मास्वकार्येक्षिपत्माधक॥दुष्टकार्येयुनिर्हृतीराज
कार्येयुविक्रमः॥२२॥परयाकाजमाहायुक्तिलाडदुष्टाफुकाजमाहाच
उत्तिङ्गगर्हमित्रकाकाजमाहातिशयगर्हराजकोकाजमाहाबललाड
नु॥२३॥जललेदेवनीचाढायत्तंतत्तद्दृश्यते॥अचलेठचसाधूजो
शिलालेदेवतिष्ठती॥२४॥नीचलाइकतिडपकारगन्धापिठिदेवतेन

प्रातः
५४

पातिलेलेख्या जसो साधु जल लाई एक वेर डपकार गन्धा को दुंगा मालेख्या
जसो जन्म मे टि देना ॥२१॥ महता मा पदं संति महता नेव संपदः ॥ इतरेषु म
नुष्येषु नापदो नैव संपदः ॥२२॥ वडामनुष्य लाई सुख पति ठेर दुःख प
ति ठेर इतर दुखालाई सुख पति थोरो दुःख पति थोरो ॥२३॥ शो दुस्त व्यति
चार केरा वस्त्र शो वेशा चंदुमा ॥ विष्णु स्मर रामा चैरा महता कर संपुटे ॥२
३॥ ओं क का पातले श्री महादेव संतो वहुं दुख वस्त्र ले चंदुमा सतु वहुं दुख

रामः
५४

रसाले विष्णु संतु वहुं दुख दुलो संतु वगर्त हात जो रिकत हो ॥२३॥ लेखक पा
ठक शैव ये चान्पे शास्त्र चिंतका ॥ सर्व व्यसनि हो मूढा क्रिया वेत श्रु पंडिताः
॥२४॥ लेखक पाठक शास्त्रज्ञा सवै तपो व्यसनि मूर्ख गनु क्रिया वेत पं
डित भटु ॥२४॥ वारि ज्यम श्व वारि ज्यरा ज सेवा तपो वत ॥ धारा श्वात्वा
रिकुर्वति कातरा कृषि वाहका ॥२५॥ वारि ज्यगर्तु घोडा को व्यापार गर्नु
राजा को सेवा गर्तु तपस्या गर्तु जति जल ले चार थो क गर्नु कातर ले वेत कमाउतु

चातः
५५

जजेदनाथीकारिजंविद्याथीविवदुःश्रुते॥अतःकालमपत्पाथीमानाथीदुः
पतिंजजेत॥२६॥धनकोइछागान्यालेबारीअप्यापारगर्जुविद्याकोइछाग
न्यालेअनेकशास्त्रसिकन्तुपुत्रकोइछागान्यालेअतःकालमाभितुदात
दिनुमातकोइछागान्यालेराजाकोसेवागर्जु॥२६॥मुखेपद्मदलाका
रेवावाचदतशीतले॥हृदयेकर्तेश्चरानिमिविविधंधूर्तलक्षरों॥२७॥
मुखकमलकापुलजतौसुंदरवचनआरेवेराउजतौशीतलहृदय

रामः
५५

माभन्याकैविजतैछधूर्तकालक्षरातीरदुःख॥२८॥दुर्जनःप्रियवादीचःतै
बविश्वासकारयेत॥मधुअवतिजिह्वाग्रेहृदीहालाहतंविषं॥२९॥दुर्ज
नकल्लोछभन्यामिछोकुराबोलन्यानेल्लोविश्वासैछनकुराभन्यामह
जतौछनहृदयमाभन्याकालोविषजतैकालोविषछ॥२९॥खलःस
र्षपमात्रारिपरछिद्रारिपश्यति॥आत्मतोविल्वमारिपश्यन्नपिन
पश्यति॥२९॥दुर्जनलेअर्काकोदेवभन्यासमोप्रमारापतिदेष्टुआ

चाराः
५६

अदोयभत्पावेलनतिकोपनिन्देव्याकोजसैगर्ह॥२८॥दर्शनीवाधुयेमूर्खा
धनवंतश्चनिर्गुराः॥दूरस्थापिचदृश्यंतेकिंशुकाइवपृथ्विकाः॥३०॥म
र्खहस्तलेदर्शनगर्हन्धतदुत्पातिर्गुरीभयापतिःछाछोदेविःलाहको
प्रहजसैशोभाहुं॥३०॥मूर्खोपिपरिहर्तव्यःप्रत्यक्षोद्विपदःप्रभुः॥मि
द्यतेवाक्यशालेनःअदृष्टःकंठकोयथा॥३१॥मूर्खभत्पाकामातिस्रक्का
र्जुपक्षकसोभन्पाप्रत्यक्षोद्विपदःप्रभुभयाकोमूर्खहोत्यस्कोवचत

रामः
५६

सर्पलेनदेव्याकोकंठप्रहारभयाकोजसैवथामोत्रहुं॥३१॥सर्पचूरःख
रःचूरःसर्पाचूरतरःखरः॥मेवौषधिवसःसर्पःखरःकेतोपशाम्यते॥३२॥
सर्वपनिदुष्टदुर्जनपीडिदुष्टदुष्टसर्पदेविदुष्टदुर्जनदुष्टकसोभन्पामं
त्रजोषधिलेसर्पवरुपहुं॥दुर्जनकठकैर्द्वियुक्तिलेपतिस्वाम्यग
नुहुंदैन॥३२॥हस्तिहस्तसहस्रेणशतहस्तेनवाजितः॥श्रेणिशो
दशहस्तोवदेशात्प्रागेनदुर्जनः॥३३॥हस्तिशितहजारहस्तयागर

घातः

५

हनु घोडासितय सहातः सिंगहुन्पापभुदितः दशहातटा छारहनु दुर्ज
नसितदेसौ द्योडनु ॥ ३३ ॥ हसितनो कुरुहसितदाकसा हसोरावाजिनः ॥ भं
गिलिंगुड हसो नखदु हसो नदुर्जनः ॥ ३४ ॥ हसितित तं कुरुली कनवसु
घोडासितवा भुकली कनवसु पभुसिंदु हुन्पासित नलिली कनवसु
दुर्जनसित नखदुली कनवसु ॥ ३५ ॥ दुर्जन पीर हर्तव्यः शास्त्रेणालं क
नोयदि ॥ मरिणो लेकतः सर्पः किमसौ न भयंकरः ॥ दुर्जन द्वाडप

रातः

५

दशस्रभयापनि द्वाडनुपदः मरिणो नखरागत्याको सर्पदे विडुरलागे दे
नक्या तस्येशा स्रभयापनि दुर्जनदे विभयदु ॥ ३५ ॥ पात्रापात्रा विशेषेण
धेनुपत्रगयोरिव ॥ तृणान्निस्त्रवते क्षीरं क्षीरान्निस्त्रवते यियं ॥ ३६ ॥ पात्रा
रः अपात्रगा ईरसर्पविशेषदु कलोभन्या घालया ईकतगा ईलेदु
ददिदु नदुदुया ईकतसर्पले विषदिदु पात्र अपात्र इति विषयदु ॥ ३७ ॥
शुद्धशत्रुमितिज्ञात्वा नोपेक्षेत कदाचन ॥ काले दुर्जनमायाति तृण

स्तोत्रविहीनवर ॥ ३७ ॥ सानुरात्रुद्धमभिरात्रु रात्रुनरायनु त्पोदुर्जना
 चातः लेतागुगलीकालातरमाघासर्वहिवीत्रमौत्रैलेपनिनासगर्द ॥ ३७ ॥ व
 ५८ छिः केकरकेदोयो झशीतिमधुपिंगले ॥ शतंकारोचयोडे चक्रुस्पाते
 नविद्यते ॥ ३८ ॥ साठीदोयकेकरछेडछेड अलिदोयमधुपिंगलछेडछेड
 कारा छेडसयदोयछेडबोरडा छेडकड्वा छेड अतगरिसंकिदेता ॥ ३९ ॥
 स्थानकूटोदुराचारोमैचरवेहंपरित्यजेत् ॥ विश्वाससमये कार्यवि

रामः
 ५८

नाशमुपगच्छति ॥ ३९ ॥ स्थानमावस्थाकोदुराचारीकपटीयस्तामितवि
 श्वासगमापीछिनासहंछ ॥ ४० ॥ मदुनैवमंदुहेति मदुताहेतिकर्क
 शो ॥ तास्माध्वमदुनाकिंचित्तस्मान्नीक्षान्तरोमदुः ॥ ४१ ॥ शीतलपुरु
 खलेशोतकोनाशगच्छतीक्ष्णकोपीतनाशगच्छ शीतलधारणगर्त
 गाहोछरुतिकारणलेतीक्ष्णपुरुषकैशीतलशीतलभयाकोडग
 तन्नु ॥ ४२ ॥ वतेप्रज्वलितोवह्निर्हिन्मूलाविदधाति ॥ समूलमुद्धाल

यतिचोपोद्योमदुशीतले॥४१॥वनमाहादाहभयापतिरुषकोबोटिवाविज्ञा
चातः ६० नदिलेलेगयापछिःरुषकोबोटिसमेतलेजा६१शीतलभन्याकोमहादु
५६ः ६२॥स्यलरोमावलीवर्द्धकस्याववद्रुषाधिराणि॥६३यरारिवक्षेत्रारिादू
तःपरिवर्तयेत्॥४२॥केनाहुलोभयाकोमोष्याःश्वरैकुरागर्णीकत्पाः६४यरभ
मिठाठादेविछाडनु॥४३॥रहस्यमेदपैमून्यंपरदोयाजुकीतीनि॥क
लहप्रकृतिवैवदूरतःपरिवर्तयेत्॥४४॥गुप्प्रजासगर्णीचुक्तिगर्णीःअ

रामः
५६